किसे पता था कभी देश में...

-डॉ. रामवीर

किसे पता था कभी देश में
ऐसे भी दिन आएंगे,
अंग्रेजों के मुखबिर सहसा
देशभक्त हो जाएंगे ।

नारा था न खाने देंगे
और नहीं खुद खाएंगे,
लेकिन सत्ता में आते ही
सब नारे झुठलाएंगे।

अन्य दलों में जो कमियां थीं
उन का ढोल बजाएंगे,
और उन्हीं कमियों के शोर में
अपना काम कर जाएंगे ।

ये शब्दों के बाजीगर हैं
सब्ज बाग दिखलाएंगे,
फेक न्यूज और झूठे वीडियो
से सब को भरमाएंगे ।

वैसे तो पढने लिखने की
इन की कभी रही न आदत,
लेकिन कुछ प्राचीन चिन्तकों
के सूत्रों से हैं ये अवगत ।

%राजा की प्रभुता के पीछे
भी होता है धन का हाथ%
वेदव्यास का यही उद्धरण
लग गया है मोदी के हाथ ।

धन के पीछे पडा है मोदी
जो टोके वह देशविरोधी,
दुनिया की नजरों में देश की
बची खुची इज्जत भी खो दी ।

आधी अधूरी इकतरफा ही
जो पढते सुनते हैं बात,
मुझे पता है ऐसे लोगों
को मालूम नहीं हालात ।

सारे चैनल और अखबार
हो गए हैं चान्दी के चारण,
ऐसे परिवर्तन के पीछे
लोभ और भय दो ही कारण ।

लाठियों की चटक

लाठियों की चटक ने चमड़ियों को छीला था
हंसते हुए फंदे को झूला था

घोड़ों की नाल को,जलियांवाला में
गोलियों के काल को झेला था

एक बूढ़ा,जो अन्न त्याग देता था
कई सिरफिरे,जो जेलों में आजादी को आग देते थे

कंगना! भीख में तुम्हें पद्मश्री मिला होगा
आजादी तो लहू के फुहारों से मिली थी

- रमेश

अम्बानी भाई लन्दन की डगर पर

रवींद्र गोयल

जब दुनिया के सबसे धनी (अमेजन कंपनी के मालिक जेफ्फ बेजोस और इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला के मालिक एलोन मुस्क) दूसरे गृह पर अपनी कुटिया बनाने के लिए जमीन देख रहे है, कुछ सूत्र कह रहे हैं कि हमारे अपने मुकेश भाई अम्बानी ने भी लन्दन में एक कुटिया खरीद ली है. उनके इस घर में 49 बेडरूम हैं. 300 एकड़ जमीन पर बने इस घर को अंबानी ने 592 करोड़ रुपए में खरीदा है. और लन्दन में बसने के लिए भारतीयों को ग्रीन वीजा के लिए 18 करोड़ रुपए का भी निवेश करना पड़ता है. अम्बानी परिवार ने हिन्दू संस्कृति के प्रेम और लगाव की वजह से अपने लन्दन वाले नये मकान पर एक मंदिर भी बनवाया है. मंदिर का डिज़ाइन उनके मुंबई स्थित घर और उनकी रिलायंस कंपनी के विभिन्न भारतीय कार्यालयों के समान है. गणेश, राधा-कृष्ण और हनुमान की संगमरमर की मूर्तियां राजस्थान के एक मूर्तिकार से ली गई हैं. मुंबई से दो पुजारियों को भी ले जाने की उम्मीद जताई जा रही है.

इस दीवाली वो और उनका परिवार वहीं थे और जानकार सूत्र कह रहें हैं कि भविष्य में ज्यादातर समय वो लोग लन्दन में ही रहेंगे. लेकिन आज (6 नवम्बर) के कुछ अखबारों में रिलायंस इंडस्ट्रीज का स्पष्टीकरण छपा है जिसमें कहा गया है कि वहां बसने का अम्बानी परिवार का कोई इरादा नहीं है. लन्दन में संपत्ति खरीदने का वास्तविक उद्देश्य वहां एक प्रमुख गोल्फ़िंग और स्पोर्टिंग रिज़ॉर्ट विकसित करना है.रिलायंस ने कहा कि इस संपत्ति के अधिग्रहण से समूह के तेजी से बढ़ते उपभोक्ता कारोबार में इजाफा होगा."साथ ही, यह विश्व स्तर पर भारत के प्रसिद्ध आतिथ्य उद्योग के पदचिह्न का भी विस्तार करेगा."

लन्दन यूँ तो हाल के दिनों में बैंक न लौटने वाले विजय मल्ल्या और नीरव मोदी की शरण स्थली रही है. कुछ दिन पहले उसने क्रिकेट की दुनिया के सट्टेबाज ललित मोदी को भी अपने यहाँ पनाह दी थी. अम्बानी भाई वाकई लन्दन जाएँगे या नहीं इसके बारे में भी अभी निश्चित कुछ कहा नहीं जा सकता.

कुछ लोग यह जरूर कह रहे हैं कि कोविद महामारी में लॉकडाउन के दौरान अम्बानी परिवार को दूसरे घर की जरूरत महसूस हुई. मुंबई स्थित अल्टामाउंट रोड पर 4 लाख वर्ग फुट पर एंटीलिया नामक मकान के बावजूद लॉकडाउन के दौरान मुकेश अंबानी का पूरा परिवार गुजरात के जामनगर में उनकी रिफाइनरी के परिसर में ही रहा. यह भी सच है कि इसी साल 25 फरवरी, 2021 को मुकेश अंबानी के मुंबई घर के बाहर एक लावारिस स्कॉर्पियो में जिलेटिन की छड़ें मिली थी. स्कॉर्पियो से एक चिट्ठी भी मिली थी जिसमें लिखा था- "नीता भाभी और मुकेश भैय्या फैमिली यह एक झलक है. अगली बार यह सामान पूरा होकर आएगा. तुम्हारी पूरी फैमिली को उड़ाने के लिए इंतजाम हो गया है, संभल जाना। Good Night."

यह भी सच है की पिछले दिनों देश के धनपतियों में भारत छोड़ो की होड़ सी लगी है. 5 महीने पहले ग्लोबल वेल्थ माइग्रेशन रिव्यू की एक रिपोर्ट आयी थी. उस रिपोर्ट के मुताबिक 2020 में भारत के पांच से छह हजार अमीरों ने देश छोड़ादेश छोड़ दिया है, इस साल यानि 2021 में पिछले साल से ज्यादा अमीर देश छोड़ सकते हैं. इससे पहले 2015 से 2019 के बीच 29 हजार से ज्यादा करोड़पतियों ने भारत की नागरिकता छोड़ी थी.

और एक बात यह भी है कि पिछले साल अपने गुजरती भाई अडानी के मुकाबले मुकेश भाई को काफी कम कमाई पर ही संतोष करना पड़ा. हुरून रिपोर्ट बताती है कि पिछले साल जहाँ अडानी परिवार ने 1002 करोड़ रुपये रोज कमाए वहीँ अम्बानी को केवल 163 करोड़ रुपये की कमाई पर संतोष करना पड़ा. और अडानी के मुकाबले पिछले साल अम्बानी भाई ने सरकारी संपत्ति की खरीद में भी कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई.

लगता है अम्बानी भाई कि भारत पलायन की गुत्थी समय के साथ ही सुलझेगी. वैसे अंग्रेजी की यह कहावत 'there can be no smoke without fire' (आग के बिना धुआं नहीं होता) शायद यूँ ही तो नहीं बनी है.

हुरून रिपोर्ट लन्दन आधारित एक शोध और प्रकाशन संस्था है जो दुनिया के धन कुबेरों की संपत्ति, उसमें फेर बदल, उनके कामों आदी पर सालाना रिपोर्ट प्रकाशित करती है . यूँ तो यह संस्था पुरानी है पर भारत में यह संस्था 2012 से काम कर रही है और सितेम्बर माह के अंत में इस संस्था ने 2020 के मुकाबले 2021 में भारत के धनपतियों की सूची और पिछले एक साल में उनमें आये बदलाव सम्बन्धी अपनी रिपोर्ट ?ारी की है.

छठ पूजा के पीछे भी पुत्र लालसा

सूर्य अनेक देवताओं या आदित्यों में से एक है। आदित्य में सभी देवता शामिल हैं, केवल सूर्य नहीं। कश्यप की दूसरी पत्नी अदिति से पैदा हुए पुत्रों को मां के नाम पर आदित्य कहा गया। उसी प्रकार जैसे कश्यप की पहली पत्नी दिति से पैदा हुए पुत्रों को दैत्य और तीसरी पत्नी दनु से पैदा हुए पुत्रों को दानव कहा गया।

कुछ भी कहिए बात वहीं तक जाएगी। पुरोहितवाद। उत्सव है, मनाइए। प्रकृति की आड़ में उसे तार्किकता से लैस मत करिए। इस पर्व के पीछे की आकांक्षा को समझिए। भोजपुरी प्रदेशों से निकले इस पर्व में औरतें एक गीत गाती हैं। पांच पुतर एक बेटुइआ छठी मइया हमरा के दह्य, सूरूज मल हमरा के दह्य, आदितमल हमरा के द। (यानी हे सूर्यदेव! हे छठ मैया! मुझे पाँच पुत्र और तब एक पुत्री दीजिए।)

मूल रूप से यही भावना इस पर्व के पीछे छिपी हुई थी। पुत्रों की चाहना और उसकी रक्षा। अब इसे मनाने के पीछे जितने भी नए तर्क गढ़ना चाहें, गढ़ें। आपको रोकता कौन है? छठ मनाइए और ठेकुआ खाइए। कुछ ज्यादा बना हो तो मुझे भी पार्सल कर दीजिए।

लेकिन छठ पूजा करने वाले हम भोजपुरी भाषियों ने प्रकृति को आभार देने के नाम पर प्रकृति के साथ कैसा सलूक किया है, उसे छठ पर्व नहीं मनाने वाले दक्षिण भारतीयों से पूछ लीजिए। पूजा एक अनुष्ठान है।

सत्यनारायण की पूजा के लिए भी तर्क दिया जा सकता है कि यह सत्य की पूजा है। अब इस पूजा को करने वाले कितना सत्य बोलते हैं, या इसके पीछे क्या सत्य बोलना उद्देश्य है अथवा धन की लिप्सा, ये तो वही बता सकते हैं, जो सत्यनारायण की कथा-पुस्तिका को पढ़ चुके हों।

-साइबर नजर